ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

संदर्भिका

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

संदर्भिका

एक संदर्भिका का मुख्य उद्देश्य यह दर्शाना होता है कि शोध निबंध अर्थात शोध प्रबंध किन साक्ष्यों पर आधारित है। यह एक ऐसी संदर्भिका नहीं होनी चाहिए जो ऐसी पुस्तकों से भरी हो जिनका विषय के साथ कोई वास्तविक संबंध नहीं है, क्योंकि इसका उद्देश्य ज्ञान का प्रदर्शन नहीं होता अथवा आश्चर्य पैदा करना नहीं होता है। स्रोतों की एक ऐसी सूची होनी चाहिए जो स्पष्ट विवरण दें कि किन-किन संग्रहों का उपयोग किया गया है और वह कहां पाए जा सकते हैं अर्थात शोध प्रबंध के लेखन करते समय शोधार्थी के द्वारा अपने शोध प्रबंध को उत्कृष्ट बनाने के लिए किन-किन पुस्तकों, किन-किन ग्रंथों का अध्ययन किया गया है, उनका लेखनी में उपयोग किया गया है तथा वे संदर्भ अगर किसी शोधार्थी या विद्वतजन को देखने हो तो वह किस आधार पर उसे आसानी से देखकर या प्राप्त कर कर सके, ताकि जब कोई समस्या उत्पन्न हो तो उसे आसानी से प्राप्त कर अध्ययन किया जा सके। मुद्रित पुस्तकों की एक ऐसी सूची होनी चाहिए जो वास्तविक संस्करण के प्रकाशन की तिथि और स्थान की सूचना प्रदान करें। एक संदर्भिका का दूसरा उद्देश्य अन्य विद्वानों के प्रयोग के लिए सम्बद्ध साहित्य की उपस्थिति का सामान्य अभिलेखन भी हो सकता

है । अतः केवल यह प्रदर्शित करने के लिए की कृति विस्तृत ज्ञान पर आधारित है, संदर्भिका में ऐसी पुस्तकें नहीं सम्मिलित करनी चाहिए जो पढ़ी न गई हो।

संदर्भिका सामान्यतः पुस्तक अथवा शोध प्रबंध में दी गई पादटिप्पणियों में से पुस्तकों, लेखों के शीर्षकों की सूचना उठाकर बनाई जाती है । संदर्भिका लेखवार (Authourwise) वर्णक्रमानुसार (अल्फाबेटिकल ऑर्डर) लिखी जाती है। इसमें लेखक का उपनाम पहले आता है , फिर प्रथम नाम आता है, तत्पश्चात कृति का शीर्षक और स्थान एवं साथ ही प्रकाशन का वर्ष तथा संस्करण लिखा जाता है। इसमें पृष्ठ संख्या देने की कोई कोई आवश्यकता नहीं होती है। उदाहरण के लिए अलतेकर, अनंत सदाशिव, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, वाराणसी, 2008, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

संदर्भिका के प्रकार :-

पुस्तकों में प्रयोग की जाने वाली संदर्भिकाएं मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं :-

1. पहले प्रकार के संदर्भिका सामान्य होती है, जहां एक सूची लेखकों के नाम से वर्ण क्रमानुसार व्यवस्थित होती है। यह सूची कार्य के

लिए उपयोग की गई पुस्तकों , लेखों ,समाचारपत्रों इत्यादि से तैयार की जाती है।

2. दूसरे प्रकार के संदर्भिका चयनित संदर्भिका होती है, जिसमें मात्र मूल्यवान पुस्तकों को ही सम्मिलित किया जाता है। यह उपयोग की गई सामग्री से व्यवस्थित की जाती है और वर्गीकृत संदर्भिका कहीं जा सकती है। कुछ लेखकों ने पुस्तक में प्रयुक्त विषय वस्तु के अनुसार विभाजित कर संदर्भिका तैयार करने को प्राथमिकता दी है।